website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2018-2020

सत्य का प्रवाह सतत प्रवाह

pp पवन प्रवाह

www.pawanprawah.com

e-mail-pawanprawah@gmail.com

भारत में डिजिटल शिक्षा के बढते कदम

लेखक डॉ. भरत राज सिंह

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रारुप नव गठित भारत सरकार 30 मई 2019, शुक्रवार को मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक को सौंपा गया। निशंक ने आज दिनांक 31 मई 2019 को ही कार्यभार संभाला और जो मौजूदा शिक्षा नीति 1986 में तैयार हुई थी और 1992 में इसमें संशोधन हुआ का अद्धयन किया । जिनका सन्क्षिप्त विवरण पूर्व मे उल्लिखित किया गया था, जिसपर लोगो के विचार लिये जा रहे है, जिनके कुछ अंश दिया जा रहा है।

भाग-18

गतांक से आगे

विश्व मे शिक्षण-प्रक्रिया, एक बडे परिवर्तन से गुजर रही है। अगर हम पारंपरिक शिक्षा के परिदृश्य को, वर्तमान समय से 10-20 वर्ष पूर्व देखे, तो आज इसका स्थान प्रौद्योगिकी ने लगभग संभाल लिया है । हमारे जीवन के हर क्षेत्र मे प्रौद्योगिकी ने अपनी पैठ बना ली है और शिक्षा मे भी ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की शुरुआत बडे पैमाने पर हुई है । अब स्कूलों में नाम लिखाकर पढने की आवश्यकता नही है, घर बैठे ही आप अपनी पसंद के किसी भी कोर्स को, जो अक्सर सम्पूर्ण विश्व के प्रमुख विश्वविद्यालय और संस्थानो मे एक दूसरे के पारस्परिक साझेदारी में आयोजित किया जा रहा है, ले सकते हैं और पढ सकते है। इसके लिये मात्र एक अच्छा इंटरनेट कनेक्शन वाला कंप्यूटर आपके पास होना आवश्यक है ।

डिजिटल शिक्षा

इस तरह की पढाई मे आप अपनी इच्छानुसार, अपने दूरस्थ आभासी साथी के साथ चर्चा करते हुये, अधिक तल्लीनता और गतिशीलता से सीख सकते हैं। शिक्षार्थियों द्वारा अपने किसी प्रश्न का उत्तर भी ऑनलाइन विशेषज्ञों से संपर्क कर प्राप्त किया जा सकता है । आज कई ऑनलाइन सीखने वाली वेबसाइटें आपको मामूली शुल्क अदा करने पर, एक वैध प्रमाणपत्र भी उपलब्ध कराती हैं। शिक्षा के क्षेत्र मे यह एक बहुत राहत देने वाली गति है, जिसने स्व-शिक्षा को विश्व मे तीव्र गति से बढ़ावा दिया है। यह मौलिक शिक्षा प्रणाली से अलग हटकर, जिसका अभी भी लगभग सभी भारतीय स्कूलों में पालन किया जा रहा है, अब जो डिजिटल लर्निंग प्रणाली ने कदम रखा है, काफी हद तक स्वीकार्य हो रही है और भारत की विशाल जनसंख्या को दृष्टिगत रखते हुये, उन्हे शिक्षित करने की दिशा में दूरगामी प्रभाव डालेगी ।

1.0 डिजिटल शिक्षा तथा उसके प्रभाव

आज डिजिटलीकरण और तकनीकी प्रगति का युग है, जहां अब हम अपने जीवन के लगभग हर पहलू पर डिजिटल शिक्षा के प्रभाव का समना कर रहे हैं, जोकि एक सतत प्रक्रिया है। डिजिटलीकरण का प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से दिखाई दे रहा है और इसने बड़े बदलावों को प्रभावित किया है कि कैसे शिक्षा प्रदान की जा रही है और इसका उपभोग किया जा रहा है। मुद्रित सामग्री या पुस्तक-पुस्तक आधारित शिक्षण से शिक्षा से ग्रहण की निर्भरता कम हो रही है और एक अतीत की विशिष्टता बन गई है। पिछली शताब्दी तक, भारत में शिक्षा प्रणाली पारंपरिक कक्षा-आधारित शिक्षा थी, जहाँ छात्रों को पठन-पाठन में सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर नहीं मिलता था। बदलते समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए, उपरोक्त अवधारणाओं को अधिक स्पष्ट करना आवश्यक हो गया है । क्योंकि विश्व स्तर पर छात्रों को अपने को प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्तरूप मे सक्षम होना चाहिये, इसके लिए, डिजिटल शिक्षण की अवधारणा 2002-03 में विकसित हुई । प्रौद्योगिकी क्षेत्र ने शिक्षा क्षेत्र में अपने पंख फैलाने के साथ, अतीत की ठेठ कक्षा, जिसकी विशेषता कभी लंबे सत्रों

तथा घंटो उबाऊ होने की थी, अब एक दिलचस्प व ओत-प्रोत भरी शिक्षा में बदल रही है। यहा यह कहना उपयुक्त होगा कि डिजिटल शिक्षा ने छात्रों और शिक्षकों दोनों के जीवन को आसान बना दिया है।

भारत में ई-लर्निंग उद्योग एक आकर्षक रूप ले लिया है, जो साल-दर-साल 25 प्रतिशत की स्थिर विकास दर का गवाह है और 2021 तक 1.96 बिलियन का उद्योग होने का अनुमान है। भारत में 1.5 मिलियन से अधिक स्कूलों और 18,000 उच्च शिक्षा संस्थानो के नेटवर्क के साथ, डिजिटल शिक्षा का बाजार बहुत बड़ा है । आज, डिजिटल लर्निंग अब एक लक्ज़री व्यवसाय नहीं रह गया है, लेकिन स्कूलों में लर्निंग के डिजिटल टूल्स को लागू करना एक आवश्यकता बन गयी है। विकसित राष्ट्रों की तुलना में भारत में डिजिटल शिक्षा 55 प्रतिशत की तीव्र गति से बढ़ रही है।

आज, भारत शिक्षा के लिए दुनिया के शीर्ष स्थलों में से एक है। कुछ बेहतरीन कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के साथ, यह अपनी उत्कृष्टता और उच्च मानकों के लिए प्रसिद्ध है। इससे भी अधिक दिलचस्प बात यह है कि भारत में छात्रों द्वारा शैक्षिक सामग्री का उपभोग करने के तरीके को बदलने के लिए प्रौद्योगिकी कैसे तेजी से आगे बढ रही है। इसके अतिरिक्त, इंटरनेट आधारित स्मार्टफ़ोन की पहुंच, भारत में भौगोलिक क्षेत्रों के छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा अपनी पैठ बना रही है। छोटे बच्चे अपने पसंदीदा कार्टून देख रहे हैं और एक ही डिवाइस पर सचित्र कविता सीख रहे हैं। लचीले और गैर-दखल देने वाले प्रारूपों के माध्यम से उन्हें शिक्षा प्रदान की जा रही है। नतीजतन, सभी आयु समूहों के छात्र सीखने की ललक के साथ खुशी की खोज कर रहे हैं और समय का आनंद उठा रहे हैं। डिजिटल सीखने में, माता-पिता के विचारों और शिक्षकों के दृष्टिकोण में भी उल्लेखनीय बदलाव आया है। आज, संस्थान अपने जीवन भर सही तरीके से सीखने के तरीके पर ध्यान केंद्रित करने स्थान पर छात्रों पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास कर रहे हैं। भारत ने भले ही शिक्षा तकनीक को आसानी से नहीं अपनाया हो, लेकिन यह आश्चर्य चकित करने वाला है कि शिक्षा जैसे पारंपरिक क्षेत्र में, अब तक एक सम्बल रूप में प्रौद्योगिकी का उपयोग कैसे किया जा रहा है। आज उद्यमियों, उद्यम पूंजीपतियों, कॉरपोरेट्स और सरकारों का ध्यान आकर्षित करते हुए, इस क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए कुछ अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग भी किया जा रहा है।

2.0 डिजिटल शिक्षा के मुख्य कारक

भारत में डिजिटल बाजार के विकास के प्रमुख कारक हैं: विभिन्न क्षेत्रों से बढ़ती मांग, स्मार्ट फोन उपयोगकर्ताओं की बढ़ती संख्या, इंटरनेट की पहुंच में सुधार और सरकारी स्तर पर भागीदारी में वृद्धि। नए युग के प्रौद्योगिकी मंच समग्र रूप से छात्रों, शिक्षकों और संस्थानों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने में मदद करते हैं और भारत में शैक्षिक संस्थानों द्वारा तेजी से अपनाए जा रहे हैं। क्लाउड बेस्ड प्लेटफॉर्म जो क्लासरूम को पेपरलेस करने में मदद करते हैं, वे भी ढूंढ रहे हैं। इसके अलावा आईसीटी कक्षाओं में नवीनतम विकास के अलावा, संवर्धित वास्तविकता (एआर) और आभासी वास्तविकता (वीआर) को शिक्षा के क्षेत्र में अपनाया जा रहा है।

इसके अलावा, आईटी से संबंधित प्लेटफ़ॉर्म के अधिकाधिक लॉन्च ने उद्यमशीलता के बड़े अवसर पैदा किए हैं और कई शिक्षा स्टार्टअप, ई-लर्निंग मॉड्यूल के नए और बेहतर संस्करणों के साथ छात्रों की मांगों और उनमे आने वाले बदलावी जरूरतों के अनुरूप विकसित हुए हैं। ई-लर्निंग सामग्री को ऑडियो सप्लीमेंट के साथ एक समग्र चित्र प्रस्तुत करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो सीखने को बहुत अधिक रोचक बनाता है क्योंकि शिक्षार्थी अब 'देखने और सुनने' दोनों इंद्रियों का उपयोग करते हैं। ऐसी कई कंपनियां हैं जो आज स्कूलों और छात्रों को विभिन्न रूपों में ई-लर्निंग लेने के लिए सहायक हैं और वे डिजिटल सामग्री के साथ देश भर में मिलियन से अधिक शिक्षार्थियों का समर्थन करते हैं।

2.1 आईसीटी समाधान

देश में शिक्षा की पहुंच प्रदान करने में विभिन्न बाधाओं को दूर करते हुये और आगे बढ़कर समाधानों की फेरिस्त तैयारकर आईसीटी द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। यह कहना अतिशयोक्ति नही होगा कि देश में डिजिटल साक्षरता बढ़ने के साथ, आईसीटी समाधानों ने देश के नुक्कड़ और बिभिन्न कोनों तक को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में भी गति दी है। देश को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलने की दृष्टि से ÷डिजिटल इंडिया÷ जैसी सरकार की पहल से, आईसीटी समाधान न केवल शिक्षा को बढ़ावा देने में बल्कि डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने की दिशा में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

2.2 सामाजिक मीडिया

सोशल मीडिया भी देश में 'डिजिटल लर्निंग' के प्रसार में एक महत्वपूर्ण शिक्षण उपकरण है। इसका असर भारत में वर्षों से चली आ रही शैक्षिक प्रक्रिया पर पड़ रहा है और अब ग्रामीण आबादी पर भी इसका असर आने लगा है।

क्रमशः शेष अगले अंक मे पढ़ें